राष्ट्रीय संस्करण

www.jagran.com

दैनिक जागरण

दैनिक जागरण नई दिल्ली, 9 सितंबर, 2021

समर्पण का भाव ही सच्ची राष्ट्र सेवा

राष्ट्र निर्माण के प्रति हम सभी को समर्पण का भाव रखना चाहिए। यदि सरलता से इसे कहें तो देश में जन्म लेने वाले सभी व्यक्ति का राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पण का भाव रखना ही सच्ची राष्ट्र सेवा है। इसे आप यूं भी समझ सकते हैं कि राष्ट्र है, तो ही हम हैं। राष्ट्र की सुरक्षा व एकता को कायम रखना हमारा परम कर्तव्य है। किसी भी कार्य की शुरुआत के समय हमें एक बार अपने राष्ट्र के बारे में अवश्य सोचना चाहिए। यदि हमारा कार्य राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो, तो ही हम उस कार्य को करें। यदि हमारे कार्य से राष्ट्र को किसी भी रूप में हानि पहुंच रही हो तो वह कार्य कभी न करें। हमारे सामने यदि कोई भी राष्ट्र को अपमानित करने की चेष्टा करता है तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उसे मुंहतोड़ जवाब दें।

एक अभिभावक के लिए, एक शिक्षक के लिए सच्ची राष्ट्र सेवा इससे बढ़कर नहीं हो सकती कि हम एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करें जिसमें देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हो। नई पीढ़ी को अपने राष्ट्र भक्तों की जीवन शैली और उनके योगदान की जानकारी गंभीरता से दें। हम चाहे जिस भी परिस्थिति में रहें, एक सकारात्मक सोच के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। याद रहे इतिहास में ऐसी शख्सियत जिनके कृत्य राष्ट्र प्रेम की भावना से ओतप्रोत रहे, उनके प्रति सम्मान का भाव हमेशा रहता है। राणा प्रताप, शिवाजी इसके उदाहरण हैं। विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी उन्होंने राष्ट्रप्रेम की भावना का परित्याग नहीं किया। अब राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव हमारे अंदर तभी जागृत होगा जब इसके लिए हम सभी मिलकर अच्छे चरित्र वाले नागरिकों का निर्माण करेंगे। चरित्र एक ऐसी पूंजी है जो राष्ट्र निर्माण में विशेष भूमिका का निर्वहन करता है। हमारे घर में माता-पिता तो विद्यालय में शिक्षक चरित्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

माता-पिता किसी बच्चे के चरित्र निर्माण की प्रथम पाठशाला होते हैं। कहा भी जाता है कि बच्चे देश के भविष्य होते हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम बच्चों को राष्ट्र निर्माण की दिशा में ले जाएं, उन्हें राष्ट्र सेवा में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करें। ऐसा तभी होगा जब हम सभी अपनी जिम्मेदारियों को सही तरीके से निभाएंगे। बच्चे जब बड़े होंगे तो वे देश के विकास में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देंगे। कृषि, उद्योग, व्यापार में आधुनिक तौर तरीके अपनाकर देश की प्रगति में एक नया सबेरा लाएंगे।

-कांता सहरावत, प्रधानाचार्य, नित्या सरस्वती मेमोरियल पब्लिक स्कूल, धवल पार्क

देश के लिए बड़े बलिदान की आवश्यकता नहीं है। छोटे-छोटे कदम अपना हम राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। हमें स्वच्छता और सार्वजनिक संपत्ति का ध्यान रखना है। छोटे-छोटे कदमों से भी राष्ट्र सेवा में योगदान दे सकते हैं। मेरा दोस्त शिवांश मुझे इस प्रकार के कार्य करने की प्रेरणा देता है।

-प्रतीक गौर, एमएम पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, वसुधा एन्क्लेव, पीतमपुरा

दोस्त वह व्यक्ति होता है जो दोस्त के लिए अपने स्वार्थ को छोड़ देता है। अपने दोस्त की मदद करने के लिए सदैव आगे रहता है और उसके लिए निस्वार्थ भाव रखता है। दोस्ती किसी भी व्यक्ति को एक बेहतर इंसान बनाती है। दोस्ती में बहुत कुछ सीखने को मिलता है। - ऋचा शर्मा, डा. संपूर्णानंद सर्वोदय कन्या विद्यालय नंबर एक सी-ब्लाक यमुना विहार।